शैल चित्रः कल्पना और यथार्थ

बांस के पेक-मर्ले नामक स्थान पर गुफाओं में कुछ शैल चित्र हैं। ये शैल चित्र पाषाण युग के माने जाते हैं। इनमें से रोचक चित्र वे हैं जिनमें घोड़े के शरीर पर काले धब्बे बनाए गए हैं। आजकल तो ऐसे घोड़े होते नहीं और कई पुरावेत्ताओं का मत है कि 25,000 वर्ष पहले भी ऐसे तेंदुआ-खाल वाले घोड़े नहीं होते थे। लिहाज़ा उनका मत है कि ये दरअसल कल्पना के घोड़े हैं।

मगर बर्लिन के *लीबनिज़ इंस्टीट्यूट फॉर ज़ू एण्ड वाइल्डलाइफ रिसर्च* के अर्ने लुडविग और उनके साथियों ने साइबेरिया के प्राचीन घोड़ों के अवशेषों से प्राप्त डीएनए का विश्लेषण करके कुछ और ही निष्कर्ष निकाला है। डीएनए जीवों की कोशिकाओं में पाया जाने वाला आनुवंशिक पदार्थ होता है, और इसी से उस जीव के गुणधर्म तय होते हैं। *प्रोसीडिंग्स ऑफ दी नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्सेज़* में प्रकाशित उनके शोध पत्र में बताया गया है कि इनमें से छः डीएनए नमूनों में रंजक जीन के ऐसे रूप पाए गए जो तेंदुआ-नुमा धब्बेदार खाल पैदा कर सकते हैं। इनमें से चार नमूने पश्चिमी युरोप से थे जहां पेक-मर्ले शैलाश्रय स्थित हैं। अन्य दो नमूने पूर्वी युरोप से मिले थे।

शोधकर्ताओं का कहना है कि उनकी इस खोज के आधार पर यह तो नहीं कहा जा सकता कि शैल चित्रों में नज़र आ रहे घोड़ों के चित्र उस समय के मानवों की धार्मिक आस्थाओं के द्योतक नहीं हैं मगर यह भी हो सकता है कि ये चित्र यथार्थ का चित्रण करते हों।

लुडविग का यह भी कहना है कि धब्बेदार खाल ने संभवतः जैव विकास की दृष्टि से इन घोड़ों को हानि पहुंचाई होगी। इसका कारण वे यह बताते हैं कि आधुनिक घोड़ों में यदि रंजक जीन के इस रूप की दो प्रतियां पाई जाती हैं, तो उनमें रंजकों की गड़बड़ी पैदा होती है और उनकी रात्रिकालीन दृष्टि बधित होती है। ***(स्रोत फीचर्स)***